Genius
Page: 11
Date: / /

पुस्तक विमोचन एवं समीक्षा

21/8/26

दिनांक 21 अगस्त 2026 को विभागाध्यक्ष डॉ. रमेश टण्डन विरचित उपन्यास "मकली-मगली" (छत्तीसगढ़ी) का विमोचन व समीक्षा स्मार्ट रूम में किया गया। इस अवसर पर आमंत्रित साहित्यकार व हिन्दी के प्रबुद्ध विद्वानों की उपस्थिति रही।

उपस्थिति -

मोनिका राठौर	Monika Rathore
रुकमणी राठिया	Rathia
चाँदनी सिदार	Sidar
ईशा राठिया	Asha Rathia
Haripriya Rathia	Haripriya Rathia
सुनिमती राठिया	सुनिमती
कांति राठिया	Rathia
Rani Rathia	Rani
टेकेश्वरी निषाद	Nishad
बबीता राठिया	Babita
चमरीन राठिया	चमरीन राठिया
तुलसी यादव	
मुस्कान बंजारा	
भाग्या दिनकर	Bhagya Dinkar
फुलेश्वरी चौहान	Phuleshwarichauhan
प्रिया भारती	
चन्द्रकला	चन्द्रकला
प्रिया चन्द्रा	प्रिया चन्द्रा

(Kusum chouhan) (Anjana Sastri) Dr. Shabeena Khan (Dr R K Tandon)

Principal
MG Govt. Arts & Science College
KHARSIA (Dist. - Raigarh) C.G.

27/08/2026 12:12

नाम	हस्ताक्षर	
1) रतिराम भारद्वाज	(signature)	
2) तेजेश्वर राठौर	(signature)	
3) निखिल दास महंत	(signature)	
4) प्रवीण दर्शन	(signature)	
5) नीलकमल राठिया	(signature)	
6) उत्तम कुमार	(signature)	
7.) भैरव राठिया	(signature)	
8. Aastha	(signature)	(संचालन / समीक्षक)
9. कीर्ति यादव	Kirti	
10. तुलसी वर्मा	tulshi Varma	
11 यामिनी धिरहे	यामिनी धिरहे	
12 कुसुम पटेल	(signature)	
13. रंजीत कुमार	Rajit	
(14) चमन कुमार राठिया	(signature)	
(15) मनोज कुमार	(signature)	
(16) काजल राठिया	Kajal	
(17) बी आर माहेश्वरी	(signature)	(समीक्षक)
(18) रामनारायण भारद्वाज	(signature)	(समीक्षक)
(19) Sapna Patley	(signature)	(विमोचनकर्ता)
(20) Vedprakash Mahant	(signature)	(समीक्षक)
(21) घनश्याम	(signature)	(समीक्षक)
(22) दामोदर पटेल	(signature)	(समीक्षक)
(23) H.P. Dhankhar	(signature)	(समीक्षक)
(24) रीना साहू	(signature)	(समीक्षक)
(25) पिंकी	Baln.	(विमोचनकर्ता)

राजनीति - भारती साहू, जमुना पटेल, कुसुम पटेल।

(signature)

Principal
M.G. Govt. Arts & Science College
KHARSIA (Dist. - Raigarh) C.G.

27/08/2026 12:12

विमोचन कर्ता —

(1) डी आर माहेश्वरी पूर्व प्राचार्य
(2) एच पी टंडे व्याख्याता
(3) आर. एन. भारद्वाज शिक्षक
(4) एम आर सोनी शिक्षक
(5) स्वपना पटेल शिक्षक
(6) वेदप्रकाश महंत
(7) घनश्याम टंडन
(8) दामोदर पटेल
(9) पिंकी साहू
(10) रीना साहू
(11) आरती राठिया
(12) कुसुम चौहान
(13) डॉ. शाबीना खान
(14) अंजना शास्त्री
(15) प्रीति अनंत
(16) बुधुन धृतलहरे

समीक्षक — (1) एच पी टंडे (2) रामनारायण भारद्वाज (3) मनीराम सोनी (4) वेदप्रकाश महंत (5) बुधुन धृतलहरे (6) घनश्याम टेकाम (7) रीना साहू (8) आरती राठिया

राजनीति — आरती साहू, कुसुम पटेल, अंजना पटेल

प्रेरणा — गौतम बुद्ध, ज्योतिराव फुले, [illegible], डॉ. अम्बेडकर

आधार — डॉ. आर. के. रमन (लेखक)

[illegible] 21/8/2026

Principal
M.G Govt. Arts & Science College
KHARSIA (Dist. - Raigarh) C.G.

27/08/2026 12:12

Signature

छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'भकली-जकली' समीक्षा
समीक्षा
भकली-जकली

खरसिया कॉलेज में गूंजी छत्तीसगढ़ी साहित्य की आवाज

'भकली-जकली' का विमोचन एवं समीक्षा सम्पन्न

गर्वित मातृभूमि । खरसिया

खरसिया। शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया में शुक्रवार, 21 अगस्त 2026 को छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'भकली-जकली' के विमोचन एवं समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपन्यास के रचनाकार डॉ. रमेश टंडन हैं। कार्यक्रम में साहित्य, शिक्षा, सामाजिक एवं पत्रकारिता क्षेत्र से जुड़े अतिथियों के साथ महाविद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं, विद्यार्थी एवं साहित्यप्रेमी शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके बाद संत कबीर, गुरु घासीदास, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर एवं भगवान बुद्ध के छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया गया तथा राजकीय गीत के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया।

कार्यक्रम में डी.आर. माहेश्वरी (भूतपूर्व प्राचार्य), एच.पी. ढेढे (व्याख्याता, हिन्दी), आर.एन. भारद्वाज (अध्यक्ष), एम.आर. सोनी (महासचिव), छत्तीसगढ़ प्रगतिशील सतनामी समाज खरसिया, सपना पाटले (सह-संपादक, 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र'), वेदप्रकाश महंत (राज्य प्रभारी, संगठन एवं प्रशासन, छत्तीसगढ़ मीडिया एसोसिएशन), रीना साहू, पिंकी साहू, घनश्याम टंडन, दामोदर पटेल, डमरुधर राठिया, आरथो राठिया एवं बुबुन घृतलहरे सहित साहित्य, शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोग उपस्थित रहे। महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की कुसुम चौहान, अंजना शास्त्री एवं डॉ. शबीना खान सहित अन्य स्टाफ, छात्र-छात्राओं एवं साहित्यप्रेमियों ने भी सहभागिता की।

आयोजन के दौरान अतिथियों की मौजूदगी में डॉ. रमेश टंडन के छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'भकली-जकली' का विमोचन किया गया। उपन्यास की कथा भकली और जकली नामक मां-बेटी के इर्द-गिर्द बुनी गई है, जिसमें छत्तीसगढ़ी संस्कृति एवं सामाजिक जीवन के साथ प्रेम, मानवीय संबंध, सामाजिक शोषण, अधिकार, कानून, संविधान, अंधविश्वास एवं ढोंग जैसे विषयों को स्थान दिया गया है। विमोचन के बाद विशेष समीक्षा सत्र आयोजित हुआ, जिसका संचालन आरथो राठिया ने किया। इस दौरान वक्ताओं ने उपन्यास के कथानक, भाषा, विषयवस्तु एवं सामाजिक सरोकारों पर विचार साझा करते हुए इसे छत्तीसगढ़ी समाज, संस्कृति एवं मानवीय संवेदनाओं को सामने रखने वाली महत्वपूर्ण रचना बताया।

डॉ. रमेश टंडन द्वारा रचित उपन्यास भकली-जकली का हुआ विमोचन

दबंग दुनिया » खरसिया

शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया में 21 अगस्त को डॉ. रमेश टंडन विरचित छत्तीसगढ़ी उपन्यास भकली-जकली का विमोचन एवं समीक्षा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

स्नातकोत्तर छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद एवं स्नातकोत्तर हिन्दी साहित्य परिषद के संयुक्त तत्वावधान में दोपहर 01:00 बजे किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डी. आर. महेश्वरी, एच. पी. ढेढे, मनीराम सोनी, सपना पाटले, वेद प्रकाश महंत, घनश्याम टंडन, दामोदर पटेल, बुबुन घृतलहरे, परिषद की अध्यक्षा रीना साहू, पिंकी साहू एवं उपन्यास के लेखक डॉ. रमेश टंडन विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अतिथियों द्वारा छत्तीसगढ़ महतारी, बाबा गुरू घासीदास, संत कबीर दास, डॉ अंबेडकर, महात्मा बुद्ध के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसके पश्चात मंचस्थ अतिथियों द्वारा उपन्यास ₹भकली-जकली₹ का विमोचन किया गया।

सत्र में हुई समीक्षा बैठक

समीक्षकों में एच. पी. ढेढे जी, रामनारायण भारद्वाज, मनीराम सोनी, वेद प्रकाश महंत, घनश्याम टंडन, रीना साहू, बुबुन, आर्थी राठिया एवं अन्य उपस्थित सभी ने अपने अपने विचार रखे। सभी ने कहा कि ₹भकली-जकली₹ छत्तीसगढ़ की माटी, स्थानीय बोली छत्तीसगढ़ी भाषा और ग्रामीण जनजीवन का सजीव दस्तावेज है। लेखक ने भकली-जकली जैसे लोक शब्दों के माध्यम से मानवीय रिश्तों और संस्कृति को बहुत ही मार्मिकता से उकेरा है। भकली जकली उपन्यास में मानव समाज मे व्याप्त आडंम्बर, अंधविश्वास, कुरीतियां, महिलाओं के प्रति अमानवीय सोच पर चिंतन, अध्यात्मिक विचार, हक अधिकार के प्रति जागरूक करने हेतु संवैधानिक विचार, अध्यात्मिक,आन्तरिक सात्विक प्रेम से भरा हुआ विभिन्न समसामयिक समस्याओं विषयों पर प्रकाश डाला गया है। लेखक डॉ. रमेश टंडन ने अपनी लेखन यात्रा के अनुभव साझा किए और सभी का आभार व्यक्त किया।

साहित्यिक रंग में रंगा खरसिया कॉलेज, 'भकली-जकली' का विमोचन और सारगर्भित समीक्षा सम्पन्न

डॉ. रमेश टंडन के छत्तीसगढ़ी उपन्यास का हुआ विमोचन, साहित्यकारों एवं विद्यार्थियों ने साझा किए विचार

खरसिया। शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया में शुक्रवार, 21 अगस्त 2026 को छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'भकली-जकली' के विमोचन एवं समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपन्यास के रचनाकार डॉ. रमेश टंडन हैं। आयोजन में साहित्य, शिक्षा, सामाजिक एवं पत्रकारिता क्षेत्र से जुड़े अतिथियों के साथ महाविद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं, विद्यार्थी और साहित्यप्रेमी शामिल हुए।

दीप प्रज्वलन से हुई कार्यक्रम की शुरुआत

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके बाद महान संत कबीर जी, गुरु घासीदास जी, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर एवं भगवान बुद्ध के छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धापूर्वक नमन किया गया। राजकीय गीत के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया तथा आयोजन में पहुंचे अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

सम्मानित अतिथियों की रही उपस्थिति

कार्यक्रम में डी.आर. माहेश्वरी (भूतपूर्व प्राचार्य), एच.पी. ढेढ़े (व्याख्याता, हिन्दी), आर.एन. भारद्वाज (अध्यक्ष), एम.आर. सोनी (महासचिव), छत्तीसगढ़ प्रगतिशील सतनामी समाज खरसिया, सपना पाटले (सह-संपादक, 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र'), वेदप्रकाश महंत (राज्य प्रभारी, संगठन एवं प्रशासन, छत्तीसगढ़ मीडिया एसोसिएशन), रीना साहू एवं पिंकी साहू (पत्रकार कल्याण महासंघ छत्तीसगढ़ से सम्मान प्राप्त कवयित्रियां), घनश्याम टंडन (NET/JRF, हिन्दी), दामोदर पटेल (NET, हिन्दी), डमरूधर राठिया (राज्य स्तरीय खिलाड़ी), आरथो राठिया (M.A. Pol. Sc., Sociology, B.Ed., छात्र एम.ए. हिन्दी) तथा बुबुन घृतलहरे (भूतपूर्व छात्रा, हिन्दी) की उपस्थिति रही।वहीं महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की शिक्षिकाओं कुसुम चौहान, अंजना शास्त्री एवं डॉ. शबीना खान सहित प्रीति अनंत एवं मुकेश राठिया और हिन्दी विभाग के अन्य स्टाफ, छात्र-छात्राएं तथा साहित्यप्रेमी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

डॉ. रमेश टंडन के उपन्यास 'भकली-जकली' का हुआ विमोचन

आयोजन के दौरान लेखक डॉ. रमेश टंडन के छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'भकली-जकली' का अतिथियों की मौजूदगी में विमोचन किया गया। उपन्यास की कथा भकली और जकली नामक मां-बेटी के इर्द-गिर्द बुनी गई है। रचना में छत्तीसगढ़ी संस्कृति और सामाजिक जीवन को वर्तमान संदर्भों के साथ देखने का प्रयास किया गया है।उपन्यास में प्रेम और मानवीय संबंधों के साथ सामाजिक शोषण, अधिकार, कानून एवं संविधान जैसे विषयों को भी स्थान दिया गया है। इसके अलावा ईश्वर के सगुण-निर्गुण स्वरूप, अंधविश्वास और ढोंग जैसे विषयों पर भी रचना के माध्यम से विमर्श किया गया है।

विमोचन के बाद हुई उपन्यास की समीक्षा

कार्यक्रम का संचालन आरथो राठिया ने किया। वहीं,कार्यक्रम दौरान उपस्थित साहित्यिक व्यक्तित्वों एवं अतिथियों ने उपन्यास के कथानक, भाषा, विषयवस्तु और सामाजिक सरोकारों पर अपने विचार साझा किए। समीक्षा में उपन्यास को छत्तीसगढ़ी समाज, संस्कृति, मानवीय रिश्तों और सामाजिक परिस्थितियों को साहित्य के माध्यम से सामने रखने वाली रचना के रूप में देखा गया। वक्ताओं ने स्थानीय भाषा में साहित्य सृजन को नई पीढ़ी को अपनी भाषा, संस्कृति और जड़ों से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण बताया।

का संज्ञान लेते हुए अधिकारियों को दौरान टीम द्वारा जलभराव से प्रभावित अधिकारियों के अनुसार सर्वे पूरा होने मौजूद रहे।

साहित्यिक गरिमा के साथ आयोजित हुआ कार्यक्रम

आज की पहल। खरसिया

शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया, जिला रायगढ़ में 21 अगस्त को प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रमेश टंडन द्वारा रचित छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'भकली-जकली' का विमोचन एवं समीक्षा कार्यक्रम हर्षोल्लास एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन स्नातकोत्तर छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद एवं स्नातकोत्तर हिन्दी साहित्य परिषद के संयुक्त तत्वावधान मे दोपहर 1 बजे किया गया।

कार्यक्रम में पूर्व प्राचार्य डी.आर. महेश्वरी, हिन्दी व्याख्याता एच.पी. ढेढे. प्रगतिशील छत्तीसगढ़ सतनामी समाज खरसिया के अध्यक्ष रामनारायण भारद्वाज, महासचिव मनीराम सोनी, 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र' की सह-संपादक सपना पाटले, वेद प्रकाश महंत, घनश्याम टंडन, दामोदर पटेल, बुबुन घृतलहरे, परिषद की अध्यक्ष रीना साहू, पिंकी साहू, उपन्यास के लेखक डॉ. रमेश टंडन सहित साहित्यप्रेमी एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा छत्तीसगढ़ महतारी, बाबा गुरु घासीदास, संत कबीरदास, डॉ. भीमराव अंबेडकर एवं महात्मा बुद्ध के छायाचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इसके पश्चात मंचस्थ अतिथियों ने डॉ. रमेश टंडन द्वारा रचित उपन्यास 'भकली-जकली' का विधिवत विमोचन किया। समीक्षा सत्र में हिन्दी व्याख्याता एच.पी. ढेढे, रामनारायण भारद्वाज, मनीराम सोनी, वेद प्रकाश महंत, घनश्याम टंडन, रीना साहू, बुबुन घृतलहरे, आर्थो राठिया सहित अन्य समीक्षकों ने उपन्यास पर अपने विचार व्यक्त किए। समीक्षकों ने कहा कि 'भकली-जकली' छत्तीसगढ़ की माटी, छत्तीसगढ़ी भाषा-बोली, लोक संस्कृति और ग्रामीण जनजीवन का सजीव दस्तावेज है। लेखक ने लोक शब्दों और स्थानीय परिवेश के माध्यम से मानवीय रिश्तों, संवेदनाओं एवं सामाजिक जीवन को अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। समीक्षकों के अनुसार उपन्यास में समाज में व्याप्त आडंबर, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों तथा महिलाओं के प्रति अमानवीय सोच जैसे गंभीर विषयों पर चिंतन किया गया है। इसके साथ ही आध्यात्मिक विचार, आंतरिक सात्विक प्रेम, मानवीय मूल्यों तथा अपने हक और अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करने वाले संवैधानिक विचारों को भी प्रभावी ढंग से स्थान दिया गया है। उपन्यास विभिन्न समसामयिक सामाजिक विषयों को सामने रखते हुए पाठकों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। सभी समीक्षकों ने उपन्यास की भाषा, कथ्य, विषय-वस्तु और सामाजिक सरोकारों की सराहना करते हुए इसे छत्तीसगढ़ी साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण कृति बताया। उपन्यासकार डॉ. रमेश टंडन ने अपनी लेखन यात्रा, उपन्यास की रचना प्रक्रिया तथा 'भकली-जकली' के पीछे की प्रेरणा के संबंध में विस्तार से जानकारी साझा की। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों, समीक्षकों, प्राध्यापकों, छात्र-छात्राओं एवं साहित्यप्रेमियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापकगण, छात्र-छात्राएं एवं बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन आर्थो राठिया ने किया। साहित्यिक विमर्श और उपन्यास की समीक्षा से भरपूर यह आयोजन महाविद्यालय के साहित्यिक गतिविधियों में एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में यादगार रहा।

खरसिया कॉलेज में छत्तीसगढ़ी साहित्य की गूंज, 'भकली-जकली' का विमोचन एवं समीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न

संवाद समृद्धि पथ/वीपीएम

खरसिया। शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया में शुक्रवार, 21 अगस्त 2026 को छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'भकली-जकली' के विमोचन एवं समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपन्यास के रचनाकार डॉ. रमेश टंडन हैं। आयोजन में साहित्य, शिक्षा, सामाजिक एवं पत्रकारिता क्षेत्र से जुड़े अतिथियों के साथ महाविद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं, विद्यार्थी और साहित्यप्रेमी शामिल हुए।

दीप प्रज्वलन से हुई कार्यक्रम की शुरुआत

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके बाद महान संत कबीर जी, गुरु घासीदास जी, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर एवं भगवान बुद्ध के छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धापूर्वक नमन किया गया। राजकीय गीत के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया तथा आयोजन में पहुंचे अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

साहित्य और शिक्षा जगत से जुड़े लोग हुए शामिल

कार्यक्रम में डी.आर. माहेश्वरी (भूतपूर्व प्राचार्य), एच.पी. ढेढ़े (व्याख्याता, हिन्दी), आर.एन. भारद्वाज (अध्यक्ष), एम.आर. सोनी (महासचिव), छत्तीसगढ़ प्रगतिशील सतनामी समाज खरसिया, सपना पाटले (सह-संपादक, 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र'), वेदप्रकाश महंत (राज्य प्रभारी, संगठन एवं प्रशासन, छत्तीसगढ़ मीडिया एसोसिएशन), रीना साहू

एवं पिंकी साहू (पत्रकार कल्याण महासंघ छत्तीसगढ़ से सम्मान प्राप्त कवयित्रियां), घनश्याम टंडन दामोदर पटेल (, हिन्दी), डमरूधर राठिया (राज्य स्तरीय खिलाड़ी), आरथो राठिया (छात्र एम.ए. हिन्दी) तथा बुबुन लहरे (भूतपूर्व छात्रा, हिन्दी) की उपस्थिति रही।वहीं महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की शिक्षिकाओं कुसुम चौहान, अंजना शास्त्री एवं डॉ. शबीना खान सहित प्रीति अनंत एवं मुकेश राठिया और हिन्दी विभाग के अन्य स्टाफ छात्र-छात्राएं तथा साहित्यप्रेमी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

डॉ. रमेश टंडन के उपन्यास 'भकली-जकली' का हुआ विमोचन - आयोजन के दौरान लेखक डॉ. रमेश टंडन के छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'भकली-जकली' का अतिथियों की मौजूदगी में विमोचन किया गया। उपन्यास की कथा भकली और जकली नामक मां-बेटी के इर्द-गिर्द बुनी गई है। रचना में छत्तीसगढ़ी संस्कृति और सामाजिक जीवन को वर्तमान संदर्भों के साथ देखने का प्रयास किया गया है।उपन्यास में प्रेम और मानवीय संबंधों के साथ सामाजिक शोषण, अधिकार, कानून एवं संविधान जैसे विषयों को भी स्थान दिया गया है। इसके अलावा ईश्वर के सगुण-निर्गुण स्वरूप, अंधविश्वास और ढोंग जैसे विषयों पर भी रचना के माध्यम से विमर्श किया गया है।

विमोचन के बाद हुई उपन्यास की समीक्षा - विमोचन के पश्चात उपन्यास पर विशेष समीक्षा सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन आरथो राठिया ने किया। इस दौरान उपस्थित साहित्यिक व्यक्तित्वों एवं अतिथियों ने उपन्यास के कथानक, भाषा, विषयवस्तु और सामाजिक सरोकारों पर अपने विचार साझा किए। समीक्षा में उपन्यास को छत्तीसगढ़ी समाज, संस्कृति, मानवीय रिश्तों और सामाजिक परिस्थितियों को साहित्य के माध्यम से सामने रखने वाली रचना के रूप में देखा गया।